

नरेंद्र बेल-9: इस किस्म के पौधे मध्यम ऊँचाई वाले एवं फसल लिए पने होते हैं। फसल आकार में बड़े (16.00 × 13.50 से.मी.) मोटा अंडाकार तथा अधिक फलित सफ़ेद (34-40) किस्म होते हैं। फलों का औसत वजन 1.2 - 1.8 कि.ग्र. तक होती है तथा फलों का औसत अंधकारण फसल होती है। पृष्ठ में शैल एवं बीज की मात्रा अंधकारण तक पायी जाती है। अर्ध शुष्क क्षेत्र में औसत उपज 72.13 कि.ग्र. प्रति वृक्ष तक होती है।



चित्र: एन बी-9 का फसल फल

नरेंद्र बेल-16: इस किस्म के पौधे मध्यम ऊँचाई तथा मध्यम फलित लिए होते हैं। फसल अंडाकार काफ़ी छोटे (10.85 × 09.50 से.मी.) होते हैं। फसलों का औसत वजन 0.30-0.53 कि.ग्र. तक का होता है। फलों में शैल एवं बीज की मात्रा अधिक पायी जाती है। अर्ध शुष्क क्षेत्र में औसत उपज 39.00 कि.ग्र. प्रति वृक्ष तक होती है।



चित्र: एन बी-16 के फसल फल

नरेंद्र बेल-17: इस किस्म के पौधे ऊँचे तथा अंधकारण अधिक फसल लिए होते हैं। फसल काफ़ी बड़े (17.25 × 16.90 से.मी.) होते हैं। फसलों का औसत वजन 2-3.1 कि.ग्र. तक का होता है। फलों में बीज की मात्रा कम पायी जाती है। अर्ध शुष्क क्षेत्र में औसत उपज 35.00 कि.ग्र. प्रति वृक्ष तक होती है।



चित्र: एन बी-17 के फसल फल

प्रवर्धन: बेल के पौधे मुख्य रूप से बीज द्वारा तैयार किये जाते हैं। बीजों की बुवाई फलों से निकालने के तुरन्त बाद 15-20 से.मी. की ऊँचाई एवं 1x2 से.मी. की ब्यापारिता (नर्सरी बेड) में 1-2 से.मी. की दूरी पर की जाती है। बुवाई का उपज समय पूर्व-तुरन्त का महीना होता है। व्यवसायिक स्तर पर बेल की खेती हेतु पौधों को चन्ना (प्या) विधि से तैयार करना चाहिए। चन्ना की विधि विधि में गर्म जल में पकवती चन्ना विधि द्वारा 80-90 मिनटों के और सांक्रु डाली की वृद्धि अच्छी होती है। यह विधि एक बेले के लिए उतम गर्म गर्म के कलस को 1-2 महीने की सायाई में लेना चाहिए तथा पुराने बेले के बीज को पर धुलाई को चन्ना में रखना तथा सुखाना चाहिए। बीजों एवं फसल को सफाई में कोकर शाख समेत तस्कनीय द्वारा बेले को प्रवर्धन सार के अन्य महीनों में भी सफाईतकवत किया जा सकता है। इस विधि में कलसट या लेज विधि से गार्डिया करके 70-80% तक सफाईतकवत प्राप्त की जा सकती है। इस विधि से प्रतिवृक्ष तक सफाईतकवत प्राप्त की जा सकती है। वर्षा आगारिण क्षेत्रों में बर-रखाने (हर-मिट्टी चकवती चन्ना) विधि से 95 प्रतिशत से ज्यादा सफाईतकवत प्राप्त की जा सकता है। प्रवर्धन करने के लिए पौधों को 28-30 डिग्री सेल्सियस, आर्द्रता 80-90 प्रतिशत आर्द्रता 30 मिमिटर फुहारों का अन्तर रखना उचित होता है।



चित्र: प्रवर्धन

2

अर्ध शुष्क क्षेत्र में बेल की वर्षा आधारित उन्नत बागवानी

बेल के लिये कहा गया है 'रोगम विनाशित्तिमिन्नं इति' अर्थात् 'जो रोग का नाश करे वह बेले तक कहलाता है'। वैदिक साहित्य में इसे 'दिन वृक्ष' कहा जाता है। प्राचीन काल से बेल को 'जीवनदा' के नाम से जाना जाता है। बेल प्राचीन एवं औषधीय पौधों से भरपूर फसल वृक्ष है, जो कि भारत का देवदास है। प्रतिवृक्ष जलवायु में भी इसकी खेती समरतापूर्वक की जा सकती है। आज के इस बदलते परिवेश में भारत के लोग औषधीय फलों के प्रति अधिक जागरूक हो गये हैं। ऐसे में बेल की बागवानी अधिक उपयोगी हो गई है। इसकी बागवानी को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। बेल के पौधों (छात, छल, पत्ते, शाखा एवं फल) औषधीय के रूप में मानव जीवन के लिए बहुत उपयोगी हैं।

बेल के औषधीय गुणों का वर्णन पुरावेद, जैन साहित्य, उपनिषद, उपनिषद, चरक साहित्य, बृहत् संहिता तथा अन्य साहित्य ग्रंथों में विस्तृत रूप से मिलता है। बेल के फलों के सेवन से हृदय को ताकत और दिमाग को ताजगी मिलती है। इसके सेवन से पेट में समृद्धि अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है। बेल अपनी अनेक विशेषताओं जैसे जलन दूरनों में विविधता, प्रति इकाई उच्च उपादानक, विभिन्न प्रकार की बंजर भूमि एवं जलवायु में उगाने हेतु उपयुक्तता, पोषण तथा औषधीय गुणों से भरपूर होना, विभिन्न प्रकार की परिरक्षित पदार्थ बनाने हेतु उपयुक्त होना एवं अधिक समय तक सफाईय क्षमता के कारण 21 महीने में प्रमुख फल के रूप में स्थायित्व को प्रदान करता है। उत्तर भारत में इसका उपयोग शरबत के रूप में गर्मी के महीनों में किया जाता है। लेकिन पश्चिमी भारत के लोग शराबद्वारा इस का उपयोग धार्मिक रूप से ही करते हैं जबकि इसकी वृद्धि, विकास, फलन एवं उत्पादन के मुल्यांकन से यह ज्ञात हुआ कि बेल की बागवानी वर्षा आधारित अर्ध शुष्क क्षेत्रों में समरतापूर्वक की जा सकती है।

भूमि: बेल किसी भी प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है, परन्तु उचित जल निकास युक्त बरतुई दमट भूमि, इसकी खेती के लिये अधिक उपयुक्त है। शोथिलत जमीन जैसे-उत्तर, बंजर, कंकरीली, खाद एवं गीदड़ भूमि में भी इसकी खेती समरतापूर्वक की जा सकती है। बेल की खेती के लिए 6-8.5 मी.एच. जल वाली भूमि अधिक उपयुक्त होती है, परन्तु ऐसी भूमि में, जिसमें विद्यमानशील सोडियम 20-30% क्षारीयता स्तर (पी.एच.) मान 9 तथा विद्युत चालकता 6 मिली मूहोव प्रति से.मी. तक हो, बेल की व्यवसायिक खेती की जा सकती है। लेकिन इस प्रकार की जमीन में गडबूटे भरते समय 3-6 कि.ग्र. जिप्सम तथा 10-20 कि.ग्र. वायु अवशय मिलाये ताकि नये पौधों को उनमें न आसानी हो।

जलवायु: यद्यपि बेल एक उपोष्ण जलवायु का पौधा है, यद्यपि इसे उष्ण जलवायु में भी समरतापूर्वक उगाया जा सकता है। इसकी बागवानी सड़द जल से 1200 मिमीटर ऊँचाई तक और 5-47 डिग्री सेल्सियस तापमान तक समरतापूर्वक की जा सकती है। प्रायः इन्डस के भी टट्टीनों पर कटौ पाये जाते हैं एवं मार्च से मई की गर्मी के समय इसकी पत्तियां गिर जाती है, जिससे पौधों में शुष्क जलवायु को सहन करने की क्षमता बूढ़ जाती है। ऐसे क्षेत्र में छाया पडना बड़ा ही या जमीन में पानी एकत्रित होता हो ऐसी जगहों पर इसकी खेती करने में कठिनाई होती है।

किस्में: बेल में अनेक जैव विविधता पाई जाती है। लोकप्रिय किस्में और उनकी उपज नरेंद्र बेल की किस्मों को नरेंद्र बेल रूप में औद्योगिक विविधतायुक्त, केजावार, उत्तर प्रदेश द्वारा विकसित किया गया है। कुछ प्रमुख किस्मों का वृद्धि विकास, पैदावार तथा फल के गुणों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:-

नरेंद्र बेल-5: इस किस्म के पौधे मध्यम ऊँचाई वाले एवं अधिक फसल लिए होते हैं। फसल सिरे पर गोळादार, मध्यम आकार (11.50-12.00 से.मी.), मीठे स्वाद (32-36) किस्म) तथा कम बीज वाले होते हैं। इसका फलिका बहुत पसला (1.6 मि.मी.) होता है। मीठा कम श्रेणिक, मृतामय और अच्छे स्वाद वाला होता है। फसलों का औसत वजन 900-1200 ग्र. तक होता है। अर्ध शुष्क क्षेत्र में औसत उपज 48.25 कि.ग्र. प्रति वृक्ष तक होती है।



चित्र: एन बी-5 के फसल फल

नरेंद्र बेल-7: इस किस्म के पौधे मध्यम ऊँचाई वाले अंधकारण अधिक फसल लिए होते हैं। फसल के सिरे को चपट्टे होते हैं एवं काफ़ी बड़े (19.25 × 22.50 से.मी.) होते हैं। फसलों का औसत वजन 3-4.6 कि.ग्र. तक का होता है। फसलों में शैल एवं बीज की मात्रा कम पायी जाती है। अर्ध शुष्क क्षेत्र में औसत उपज 42.70 कि.ग्र. प्रति वृक्ष तक होती है। यह फल परिरक्षित पदार्थ बनाने के लिये उपयुक्त गर्मई आई है।



चित्र: एन बी-7 के विकसित फल

1

एग्रीकल्चर फ़ोरम फॉर टेक्निकल एजुकेशन ऑफ़ फार्मिंग सोसायटी

कोटा, राजस्थान



अर्ध शुष्क क्षेत्र में बेल की वर्षा आधारित उन्नत बागवानी

संकलन

श्री अवधेश कुमार, श्री प्रभात कुमार, डॉ. जगवीर सिंह, डॉ. कुलदीप पांडेय, डॉ. नवीन कुमार मोर्य, डॉ. भानु प्रताप और हेमन्त कुमार सिंह

फल विज्ञान विभाग
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज अयोध्या,
उत्तर प्रदेश ,224229

गहूदे की तीवार एवं पीध रोपण: बेल के पेड़ों की रोपाईं 6-8 मीटर की दूरी पर मृदा उर्वरकता के अनुसार कनाई चालिए। रोपण हेतु जुलाई-अगस्त माह का समय अच्छा पाया गया है। पीध लगाते कि लिए मई महीने को 6-8 मीटर के अन्तर पर 1 घन मी. के तहखाने तैयार कर लेते हैं। यदि पत्तियों में कंकड़ की नुई हो तो उसे निकाल देना चाहिए। इन गहूदे को 20-30 दिनों तक सड़ा लेते हैं व 3-4 टोनों/मोटर की दर से खाते और पसंखे की दर से 1 टोना/मोटर को मिश्रक भूजा चालिए। शुष्क एवं अर्ध शुष्क प्रयोग में जहां सिंचाई की सुविधि व्यवस्था न हो जहां सरसभने बाग स्थान निर्मित को प्रोत्साहित करना चाहिए और पीध एवं प्रक्रम चलाने पर्याप्त विज्ञप्ति हिस्से की पीध एवं भी असावनी से विकार करना प्रारंभ कर दें।

सिंचार व्यवस्था विधि : पतले बीज पीधों को कनाई पीध में बदलने के लिये घोंटी करना बांधना चाहिए। इसके लिये पेड़ की पत्तियों तथा कानों को अच्छे से उचित जलाई (2.5-3.0 मी.) पर गहराई में विखर कर जल भर देते हैं। इसके लिये कानों को नीचे नीचे और ऊपर से इकट्ठा करके भी छेदों की रंग लगा लेते हैं। इस इकट्ठा करे हुए पानी में मई-जून तक बरसात निकल कर कनाई चाली जाती है। जून-जुलै में मई-जून में कलिकाकरण कर देना चाहिए तथा कलिकाओं को अच्छे तरह फुटवा उपरान्त पुरानी शाखाओं को ऊपर से काट देना चाहिए। इस प्रकार के पीधों में तीसरे वर्ष से उपज प्राप्त होने लगती है।

खाद एवं उर्वरक : पीधों की अच्छी बढ़ावर, अधिक जलन एवं पेड़ों को स्वस्थ रखने के लिये प्रत्येक पीध में 5-10 कि.ग्रा. गोबर की खुरी खाद, 50 ग्राम. नाइट्रोज, 25 ग्राम. फास्फोरस एवं 50 ग्राम. पोटाश की मात्रा प्रति बेल डालनी चाहिए। खाद एवं उर्वरक की यह मात्रा दस वर्षों तक गुणित अनुपात में बढ़ाते रहना चाहिए। इस प्रकार 10 वर्ष या उससे अधिक आयु वाले वृक्ष को 500 ग्राम. नाइट्रोज, 50 ग्राम. फास्फोरस और 500 ग्राम. पोटाश के अतिरिक्त 50 कि.ग्रा. गोबर की खुरी खाद डालना उचित होता है। उत्तर भूमि में लगाने वाले पीधों प्रायः बसने की कमी के कारण दिखाई देते हैं। उत्तर-पूर्व पीध में 250 ग्राम. जिंक सल्फेट प्रति पीध की मात्रा डालना चाहिए या 0.5 प्रतिशत जलिल सल्फेट का पानी छिड़कना सुझाई। अक्टूबर एवं दिसम्बर माह में करना चाहिए। खाद एवं उर्वरक की पूर्वी मात्रा जुन-अगस्त माह में डालनी चाहिए। जिन कानों में फलों के फटने की समस्या हो उनमें खाद एवं उर्वरक के साथ 100-150 ग्राम बोरेक्स (सुहाण) / वृक्ष का प्रयोग करना चाहिए।

सिंचाई: जो पीधों को स्थायित करने के लिए एक दो वर्षों तक पानी के महीने में सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। स्वस्थगति पीधे तथा सिंचाई के भी अच्छी तरह से रह सकते हैं। गर्मियों में बेल का पीध अपनी परिष्कार गिर कर सुखाया अस्थायी में रखा जाता है और इस तरह यह सुखे को सहन कर लेता है। सिंचाई की सुविधा होने पर मई-जून के महीनों में मई-जून तक पानी की सिंचाई के अन्तर्गत पर दो सिंचाई करनी चाहिए। बेल केसल बरानी कानों अर्ध शुष्क क्षेत्रों में आसानी से बिना सिंचाई की जा सकती है।

प्रसिद्धि (प्रमोशन) : बसने खेती के लिए जौकल परदार बेल के तरे के सारे तनाएं 4 वर्ष महीने में 20 से. जी. लीटो प्रसारण करने से क्षेत्रों की सिंचाई में कुआर और सुसज्जीनों की मात्रा बढ़ जाते हैं तथा मृदा सिंचाई की अनि आवश्यकता रहती है जिससे जल के विहास तथा पैदावार पर अनुसूल प्रभाव पड़ता है। अर्ध शुष्क क्षेत्र में बरानी खेती के लिये महत्वपूर्ण है।



चित्र - पववार (मल्लिक)

छात्रक (केनोपी) प्रबंधन: बेल के पीध को इच्छानुसार घेरवा (केनोपी) का प्रबंधन किया जा सकता है। पीधों की दक्षियों को जब पीध परिवर्ण गिर चुका हो उस समय आवश्यकतानुसार काट देना चाहिए, कटे हुए भाग के नीचे से नई शाखाएँ निकलती हैं जिन्हें पीध का घेरवा बना हो जाता है। जिन्हें सूँट तथा से फल के झूलने की सम्भाना करनी हो जाती है। पीधों की छोटटी एवं अन्तः कषय प्रसारी प्रयोग करने से कनाई उत्पन्न होता है। सवाई का कर्णफल 2.4-4 वर्षों में ही करना चाहिए। मुख्य तना को 75 से.मी. तक अकेला खड़ा चाहिए। तलरखाना 4-6 मुख्य शाखाएँ एवं दिशाओं में बढने देनी चाहिए। बेल के पेड़ों में विशेष सहाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है परन्तु सूखी तथा कीटों एवं बीमारियों से ग्रसित टहनियों को समय-समय पर निकालते रहना चाहिए। आराम में इनके फलों में अन्तः फसले भी ले सकते हैं। वर्षा आधादिन बागवानी में कवचवर्ण कलिकाओं से जो कि लौकी, ककूर, करेला, खीर, इत्यादि आकार अर्द्ध आकार प्राप्ति की जा सकती है। अन्तः फसल की समय इनका बचाव कर रखा जाय कि अन्त फसल पैदा हो सिंचाई पानी की अधिक आवश्यकता न हो, अन्याय मुख्य फसल प्रभावित होती है। अनुपजाइ, भूमि में लगाने योगे कानों में अन्तः खाद तथा कीट संहारक का एक जूने वर्षाकृमि मूत परदे से भूमि की रक्षा में भी सुचारु किया जा सकता है।

रोप एवं बीज
बेल बीजक : यह रोप जेमोमोनस विन्नी कैटरीया द्वारा होता है। प्रभावितकानों पर पत्तियाँ बंद करने से जो बाल में बंद कर भूरे रंग के हो जाते हैं। समय बढ़ते के साथ में पूर्व अभासित भाग का अन्तस गिर जाते हैं और पत्तियों पर छिद्र बन जाते हैं। इस रंग की रोकथाम के लिये डेट्रोटाइडालिन (200 पी पी) को पानी में घोल कर पीधों को 2-3 वर्षों में छिड़कना करना चाहिए।

पूर्वी कवचक : यह रोप ऑडिथिया नामक फंगस द्वारा होता है। वर्षा उपरान्त बाल में कवचक इस रोग को बढ़ावा देता है प्रमुख रूप से नई एवं पुराने कालस उपजाव व शाखायें प्रभावित होती हैं। निरोग के लिए सरसकट 2 ग्राम.ली. या कवचकडिम 0.5 ग्राम.ली. का घोल बनाकर छिड़कवा करना चाहिए।

काला इत्रण : यह रोग कॉलेटोरिया नामक केमिसी नामक फंगस द्वारा होता है। फलों पर गहरे रंग के धब्बे बन जाते हैं जो बड़ कर बंदी हो. पी. व्यास के हो जाते हैं और फल के अतिरिक्त हिस्से पर छा जाते हैं। पत्तियों पर भी काने धब्बे बन जाते हैं। विकला भाग तथा सूखे का कारण हो ईड जाता है. तथा पत्तियों में छिद्र बन जाते हैं। निरोग के लिए कवचकडिम अथवा तनाबुद्धक कवचकडिम आराम मेंवीजक का छिड़कवा करना चाहिए।

डाई बेलक : इस रोग का प्रकोप सीरोसिडोसिडिया नामक फंगस द्वारा होता है। इस रोग में पीधों की टहनियाँ उपर से नीचे की तरफ झूलने लगती हैं। टहनियों एवं पत्तियों पर भूरे धब्बे बन आते हैं एवं पत्तियों गिर जाती हैं। रोग के निरोग के लिए सूखी टहनियों को छोट कर कवचकडिम (0.3%) का दो छिड़कवा 15 दिनों के अन्तराल पर करना चाहिए।

फलों का गिरवा / आन्तरिक विगमन: बेल के बड़े फल अक्टूबर-मई माह में बहुतायत में गिरते हैं। गिरे फलों में आंतरिक विगमन के लक्षण पाए जाते हैं। साथ ही बाढ़ा तथा में हमकी फटता हो जाती है तथा ये फल लीज से बूझ जाते हैं। ऐसे फलों के अन्तः परपत्रिकस्य फंगस द्वारा प्रभावित होती है। इसका फल मृदा अधिक मुलायम एवं फल गीला नगवानता हो जाता है। इसके निरोग हेतु फलों को साधवानी से तोड़ना चाहिए जिससे फल जमीन पर न छिड़े एवं फलों को लुटा कर हटाने वाले पीधों को साधवत मृत के सांके में भी नहीं आना चाहिए। पत्तियों परमन के अधुष्क क्षेत्रों में इसकी समस्या बहुत कम पाई जाती है।



परियों का काला पाटा : बेल की परियों के दोनों सहाँ पर काले धब्बे बन जाते हैं। जिनका कारण आन्तरिक पर 2-3 मि.मी. का होता है। इन धब्बों पर काली फंगस नजर आती है। इससे रोकथाम के लिए जल से नई पत्तियाँ निकल रही हो तब थैलिटेट (0.1%) या डाईफोमेट (0.2%) का 2 से 3 छिड़कवा 15 दिनों के अन्तराल पर करना चाहिए।

फलों का झूलसना एवं फलों का फटना : सूखे क्षेत्र में तापमान की वजह से फलों के थिलके भूरे तथा काले पड़ जाते हैं। कमी-कमी तो भूटे पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। फलों के जले भाग पर सूखी की किरणों सेल समय तक पड़ती है। थिलके का तापमान वातावरण की तुलना में 8 से 10 डिग्री सेल्सियस ज्यादा हो जाता है। इसके केनोपी मेनेजमेन्ट से काफी हद तक रोक जा सकता है। किसी पेड़ में सारे फल फट जाते हैं। इसका संबंधन यमीन तथा जलवायु से भी हो सकता है। यह ज्यादातर जमीन में नमी की अनियमितता और सूखम तवाँ की कमी से होता है। इनका प्रबंधन करने से काफी हद तक बचा जा सकता है।



चित्र- फलों का फटना एवं झूलसना

कीट : बेल को बहुत कम कीट नुकसान पहुँचाते हैं किन्तु पूर्व सुरंगी एवं पूर्व भक्षी हींसी पैली की परियों को काट कर पीड़ा नुकसान पहुँचाते हैं। इन कीटों की रोकथाम हेतु डाइमोथेपेट (0.5%) का छिड़कवा दो से तीन सप्ताह के अन्तराल पर एक से दो बार करना चाहिए।

फलों की तुड़ाई एवं उपज : अर्ध शुष्क एवं आधादिन क्षेत्रों में फल फलवरी माह के अन्त से तोड़ने योग्य हो जाते हैं। इन फलों का रंग गहरे हरे रंग से बदल कर पीला होने लगे तब फलों की तुड़ाई 2 से.मी. क्षणल के साथ करनी चाहिए। तोड़ने समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि फल जमीन पर न गिरने एवं अन्याय फलों का थिलका थिक्त जाता है, तथा भव्दरण के समय इन थिक्के भागों से सड़न आरम्भ हो जाती है। कनाई पीधों में 2-3 वर्षों में फलन प्रारम्भ हो जाती है, जबकि बीजू पेड़ों में फलन 7-8 वर्षों में होती है। फलों की संख्या वृक्ष के आकार के साथ बढ़ती रहती है। अर्ध शुष्क क्षेत्र में पूर्ण विकसित वृक्ष (08-10 वर्ष) से 75-110 कि.ग्रा. तक फल प्राप्त किये जा सकते हैं। गोमा यमी के सघन बागवानी (5 मी. X 5 मी.) के विकसित वृक्ष (08-10 वर्ष) से 1.25 लस खे 1.65 लस प्रति हेक्टर तक आमदनी प्राप्त की जा सकती है। मूसुकांन के उपरान्त यह पाया गया कि बेल की बरानी खेती (वर्षा आधारित) अर्ध शुष्क क्षेत्रों में सफलतःप्रयुक्त की जा सकती है।

बेल का उपयोग :



- * कचरे फलों से मुक्ता एवं केनडी बनाकर प्रयोग किया जा सकता है।
- * कचरे बेल को भूत कर खाने से भूख सम्बंधी समस्या एवं अन्य पेट विकारों से छुटकारा पाया जा सकता है।

- * कचरे बेल के फल्लो से अचार भी बनाया जा सकता है।
- * बेल के फूले को सुखा कर पावडर के रूप में प्रति दिन दूध के साथ लेने से पेट के विकारों में फायदा मिलता है।
- * बेल केसल को फूले से पीने, रक्खी, टोकी, जाम, पावडर, आईक्रीम आदि बनाकर प्रयोग किया जा सकता है।
- * नीसम में निगमित बेल के मूदा या इसका शक्कर बनाकर सेलन करने से पेट के विकारों से छुटकारा पाया जा सकता है।